बच्चों में विकलांगता की समस्या कारण एवं निवारण

डॉ. अनीता कुमारी
डॉ. अशोक कुमार सिंह

विकलांग बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक या कम गुणों वाले होते हैं। इन बालकों के लालन–पालन और शिक्षा–दीक्षा आदि का विशेष प्रबन्ध करना चाहिए। बालकों की विकलांगता केवल एक क्षेत्र से ही सम्बन्धित नहीं होती है, वह एक साथ एक से अधिक क्षेत्रों से सम्बन्धित हो सकती है। यदि विकलांगता केवल एक क्षेत्र तक ही सीमित है तो, इसका प्रभाव बालक के व्यवहार के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ता है। अतः विकलांग बच्चों के साथ उपेक्षा का व्यवहार कभी नहीं करना चाहिए। समाज व परिवार को यह कभी नहीं समझना चाहिए कि विकलांग बच्चे भार स्वरूप हैं। विकलांग बच्चे भी उचित–शिक्षण–प्रशिक्षण पाकर देश सेवा में योगदान दे सकते हैं। विकलांग बच्चों का उपहास व उपेक्षा करने पर वे आत्मकुंठित हो जाते हैं। इसलिए हमें चाहिए कि विकलांग बच्चों को हमेंशा प्रोत्साहित करें। प्रोत्साहन देने से विकलांग बच्चों में आत्मबल बढ़ता है। उनके हृदय में भी कुछ अच्छा करने की तीव्र इच्छा जागृत होती है। विकलांग बच्चों से किसी तरह का भेद–भाव हमें नहीं करना चाहिए बल्कि हमें विकलांग बच्चों पर अधिक सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए चूँकि वे सामान्य बच्चों से भिन्न हैं, लाचार हैं, असमर्थ हैं। अतः उनकी लाचारी, बेबसी व असमर्थता को उनके हृदय व मानस पटल पर बोध नहीं कराना चाहिए बल्कि उनको प्रोत्साहन देना चाहिए। उसके आत्मबल को बढ़ाना चाहिए।